

डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 25, मार्क का धर्मशास्त्र

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं जो मार्क की पुस्तक पर अपना शिक्षण दे रहे हैं। यह सत्र 25 है, मार्क का धर्मशास्त्र।

नमस्ते, मार्क के माध्यम से इस अध्ययन को समाप्त करने के बाद आपके साथ वापस आकर अच्छा लगा।

हमने पूरी किताब पढ़ ली है, और हम हर पेरिकोप में विभिन्न तत्वों पर चर्चा कर रहे हैं। और इस चर्चा के दौरान, मैं एक साथ रेखाएँ भी खींच रहा हूँ। हम विभिन्न विषयों और विचार रेखाओं पर चर्चा कर रहे हैं।

लेकिन मैं अंत में यहाँ थोड़ा समय बिताना चाहता हूँ, बस कुछ बड़े आर्क्स को संबोधित करना चाहता हूँ, अगर आप चाहें तो। हालाँकि, शुरू करने से पहले, मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि मैं उन कुछ विद्वानों को पहचानूँ जिन्होंने मेरी मदद की है और मेरे विचारों को प्रभावित करने में भूमिका निभाई है। मैंने मार्क स्ट्रांस का बहुत ज़िक्र किया है, मार्क के सुसमाचार पर उनकी टिप्पणी मुझे सबसे ज़्यादा विश्वसनीय लगती है।

अन्य विद्वान, बेन विदरिंगटन III, जेम्स एडवर्ड्स, रॉबर्ट स्टीन और आरटी फ्रांस। उनमें से प्रत्येक ने मार्क के सुसमाचार के बारे में मेरी सोच में महत्वपूर्ण तरीके से योगदान दिया है। आज भी मैं बात करना चाहता हूँ, जैसा कि हम मार्क के धर्मशास्त्र के बारे में बात करते हैं, मैं डेविड गारलैंड के हालिया प्रकाशन, ए थियोलॉजी ऑफ़ द गॉस्पेल ऑफ़ मार्क का उल्लेख करना चाहता हूँ।

मुझे इस संबंध में यह विशेष रूप से उपयोगी लगता है। और यहाँ मेरी अंतिम चर्चा निश्चित रूप से उनकी कुछ सोच को दर्शाती है। मार्क का सुसमाचार, अपने मूल में, एक ऐसी पुस्तक है जो एक प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करती है।

यीशु कौन है? मार्क ने अपने सुसमाचार की शुरुआत एक घोषणा के साथ की है, जिसमें उन्होंने खुशखबरी सुनाई है, यह घोषणा करते हुए कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। उन्होंने अपनी कहानी की शुरुआत एक विजयी तरीके से की है। उनका सुसमाचार कोई त्रासदी नहीं है; यह कोई विलाप नहीं है, बल्कि यह एक खुशी की घोषणा है कि शास्त्रों में जिसकी प्रतीक्षा की गई है, परमेश्वर के लोगों की आशा, वह आ गया है।

मार्क का सुसमाचार हमें यीशु के बारे में बताता है। यह यीशु के बारे में है। सुसमाचार में निश्चित रूप से अन्य लोग भी हैं, लेकिन इन अन्य लोगों का अर्थ केवल यीशु के साथ उनके रिश्ते पर आधारित है।

इसलिए, यह उचित लगता है कि जब हम मार्क के बारे में अपने अंतिम विचारों को समाप्त कर रहे हैं, तो मार्क के क्राइस्टोलॉजी के बारे में बात करें। आखिरकार, हमने चर्चा की है कि कैसे मार्क यीशु को एक मजबूत व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है, एक मजबूत व्यक्ति जिसने अपने लोगों को बचाने के लिए कष्ट सहें और मर गया। हमने इस बारे में बात की है कि कैसे यीशु ईश्वर का पुत्र और मनुष्य का पुत्र है, जबकि साथ ही साथ पीड़ित सेवक भी है।

क्राइस्टोलॉजी की इस चर्चा में, मैं सबसे पहले पारंपरिक दृष्टिकोण अपनाना चाहूँगा, जो यीशु को दी गई विभिन्न उपाधियों पर विचार करना है। बेशक, सबसे पहले हमें परमेश्वर के पुत्र पर विचार करना चाहिए। बिना किसी संदेह के, परमेश्वर के पुत्र की उपाधि मरकुस के सुसमाचार में यीशु के लिए मुख्य उपाधियों में से एक है।

दिलचस्प बात यह है कि यीशु को परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर का पुत्र जो दुनिया में आया है, के रूप में घोषित करना सुसमाचार की उनकी बहुत ही प्रारंभिक टिप्पणियों में होता है। हम देखते हैं कि शुरू में ही मार्क चाहते हैं कि हम यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में समझें। दो बार, स्वर्ग से एक आवाज़ यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में संबोधित करती है।

हम बपतिस्मा के समय मार्क 1:11 में, मार्क 9.7 में इसे देखते हैं। हम दोनों बार देखते हैं: तुम मेरे बेटे हो जिसे मैं प्यार करता हूँ, या यह मेरा बेटा है जिसे मैं प्यार करता हूँ। सूली पर चढ़ाए जाने पर सूबेदार ने घोषणा की, निश्चित रूप से यह आदमी परमेश्वर का पुत्र था। हमारे पास बहुत ही सहानुभूतिपूर्ण कथन हैं।

हमारे पास शत्रुतापूर्ण कथन भी हैं। दुष्टात्माएँ अक्सर यीशु को परमप्रधान के पुत्र के रूप में संबोधित करती हैं। यीशु के परीक्षण के दौरान महायाजक ने उनसे पूछा, क्या तुम परमप्रधान के पुत्र हो? जब हम मार्क के सुसमाचार में परमेश्वर के पुत्र की भाषा को देखते हैं, तो हम इसे उन लोगों के होठों पर देखते हैं जो इसे सकारात्मक रूप से मानते हैं, लेकिन उन लोगों पर भी जो इसे अस्वीकार करते हैं।

बेशक, जैसा कि हमने मार्क के अपने अध्ययन के दौरान चर्चा की, यह सेंचुरियन के कबूलनामे की ओर एक निर्माण है। उस क्षण की ओर एक निर्माण है जब, क्रूस पर, कोई सचमुच कह सकता है, निश्चित रूप से यह आदमी परमेश्वर का पुत्र था। मार्क वास्तव में सेंचुरियन के कबूलनामे पर जोर देता है।

मार्क की साहित्यिक शैली इसी दिशा में आगे बढ़ी है। यीशु को ईश्वर का पुत्र घोषित करने की लगातार मंदता या चुप्पी का मसीहाई रहस्यपूर्ण उद्देश्य एक साहित्यिक तनाव पैदा करता है जो उस क्षण के लिए तैयार करता है जब कोई पूछता है, यह कब कहना ठीक है कि यीशु ईश्वर का पुत्र है? जिस पर मार्क जवाब देते हैं, यह क्रूस की प्राप्ति में है। मार्क 8 में पीटर का कबूलनामा अधूरा है क्योंकि इसमें यीशु की मृत्यु की समझ का अभाव है।

बेशक, जैसा कि हमने चर्चा की, सूबेदार की यह घोषणा कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, सीधे मरकुस में बपतिस्मा से जुड़ी हुई है। हम देखते हैं कि विभाजित करना या फाड़ना क्रिया दोनों

कहानियों में शामिल है, बपतिस्मा और सूबेदार के कबूलनामे दोनों में। बपतिस्मा में, यह उस पर्दे को फाड़ना है जो आकाश को पृथ्वी से अलग करता है।

सूबेदार के कबूलनामे में, यह उस पर्दे को फाड़ना है जो पवित्र मंदिर को बाहर से अलग करता है। कई मायनों में, यह बपतिस्मा और सूबेदार का कबूलनामा मार्क के सुसमाचार में यीशु की सांसारिक सेवकाई की पुस्तक के अंत हैं। दिलचस्प बात यह है कि मार्क 10 :38-39 में, यीशु ने अपनी मृत्यु की पहचान बपतिस्मा से की, जो फिर से इस निष्कर्ष को मजबूत करता है कि दोनों को एक साथ रखा जाना चाहिए, कि बपतिस्मा के समय परमेश्वर द्वारा यह घोषणा कि यीशु उसका पुत्र है और सूबेदार द्वारा यह घोषणा कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, दोनों को एक साथ रखा जाना चाहिए।

यीशु स्वयं, कम से कम, परमेश्वर के पुत्र की भूमिका निभाते हैं और मार्क 12:1-12 में सिद्धांतों के दृष्टांत में खुद को इस तरह से पहचानते हैं। जैसा कि आपको याद होगा, जैसा कि हमने चर्चा की, दृष्टांत, यदि आप चाहें तो, इस्राएल के इतिहास का एक सिंहावलोकन था, इस्राएल के धार्मिक नेताओं और उनके द्वारा परमेश्वर को अस्वीकार करने का। कैसे परमेश्वर ने सिद्धांतों के सेवकों को भेजा था, जो दृष्टांत में तब तक दुर्व्यवहार किए गए, जब तक कि वह अपने प्रिय को नहीं भेजता, और किसान अपने को भेजता है, ज़मींदार अपने प्रिय को भेजता है, मेरा मानना है कि वहाँ कोई आकस्मिक संदर्भ नहीं है, क्योंकि प्रिय वह शब्दावली है जिसका उपयोग परमेश्वर ने अपने पुत्र के बारे में बात करने के लिए किया है, अपने प्रिय को भेजता है जिसे बाद में सिद्धांतों द्वारा मार दिया जाता है।

इस दृष्टांत के आलोक में, यीशु की अपनी भविष्यवाणियों के साथ कि वह धार्मिक और राजनीतिक नेताओं द्वारा मारा जाएगा, इसका मतलब है कि सिद्धांतों के दृष्टांत में, यीशु खुद कह रहे हैं, जिसका अर्थ है कि उन्हें भगवान के अपने पुत्र के रूप में समझा जाना चाहिए। परमेश्वर के पुत्र के अन्य चिह्नों में मार्क 13, 32 में यीशु का संदर्भ शामिल है कि पिता का पुत्र अंतिम घटनाओं का समय नहीं जानता है, मार्क 14 में यीशु का अब्बा का उपयोग, यहां तक कि उच्च पुजारी के सवाल पर उनका दावा कि क्या वह परमप्रधान, धन्य का पुत्र है, यीशु का दावा कि वह है, निश्चित रूप से हमें ध्यान में लाता है। हालाँकि, मार्क की चीजों में से एक परमेश्वर का पुत्र है; यीशु के पुत्र होने की सच्चाई और इस सच्चाई के बीच एक मजबूत संबंध है कि उसे पीड़ित होना चाहिए और मरना चाहिए।

परमेश्वर के पुत्र की उपाधि से निकटता से संबंधित मसीहा या क्राइस्ट की उपाधि है। पुराने नियम में मसीहा को अक्सर परमेश्वर के पुत्र के रूप में संदर्भित किया जाता था, विशेष रूप से राज्याभिषेक भजनों में, ठीक उसी तरह जैसे कि इस्राएल को भी परमेश्वर के पुत्र के रूप में संदर्भित किया जाता है। यह समझ में आता है, कॉर्पोरेट प्रमुखता के विचार को देखते हुए जहां मसीहा, राजा, लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।

और इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि हम ईश्वर के पुत्र और मसीहा भाषा के बीच एक ओवरलैप देखते हैं। बेशक, मार्क के सुसमाचार की शुरुआती आयत में यीशु को मसीहा के रूप

में पहचाना गया है। दिलचस्प बात यह है कि, हालांकि यह शीर्षक मार्क के लिए महत्वपूर्ण है, ऐसा लगता है कि सुसमाचार में मसीहा एक समस्याग्रस्त शीर्षक है, अगर आप चाहें तो।

अन्य छह में से पाँच बार जब मसीहा शब्द का प्रयोग किया जाता है, तो यह उन लोगों द्वारा कहा जाता है जो या तो यीशु के प्रति शत्रुतापूर्ण हैं या उनके मिशन को गलत समझते हैं। यीशु स्वयं, हालाँकि वह इस उपाधि को पूरी तरह से अस्वीकार नहीं करते हैं, लेकिन वे इसे अपने लिए नहीं लेते हैं। हम जिस मसीहा को देखते हैं, वह महत्वपूर्ण क्षणों में आता है, जैसे कि मार्क 8, जब पतरस यह स्वीकार करता है कि यीशु ही मसीहा है।

हम इसे फिर से देखते हैं जब महायाजक यीशु से पूछता है कि क्या वह मसीहा है। और, बेशक, हम इसे एक अंधे बार्टिमाईस से जुड़ा हुआ पाते हैं, जो यीशु को दाऊद का पुत्र कहता है, जो एक मसीहाई संबंध होगा। मार्क 12 में, यीशु ने भजन संहिता 110 :1 पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जो आने वाला है वह वास्तव में दाऊद से बड़ा है, न कि केवल दाऊद का वंशज।

शायद यह मार्क के सुसमाचार में मसीहा के उपयोग को समझने का सबसे अच्छा तरीका है यदि यह केवल दाऊद का वंशज नहीं है, बल्कि यीशु वह है जो दाऊद से बड़ा है और दाऊद से अलग है। तो, इसका अर्थ यह है कि शीर्षक समस्याग्रस्त होने का कारण यह है कि शीर्षक की समझ समस्याग्रस्त हो गई है। यीशु इस बात की पुष्टि से सहमत हैं कि वह मसीहा हैं, फिर भी इस बात की समझ को दूर रखते हैं कि इसका क्या मतलब है।

मेरा मानना है कि यीशु मसीहा की उपाधि धारण करते हैं, जो विजयी प्रवेश में स्पष्ट है। जब वह एक ऐसे जानवर पर सवार होकर यरूशलेम में आता है जिस पर सवारी नहीं की गई है, तो जकर्याह 9 का संदर्भ, जिसके बारे में हमने विस्तार से बात की, मेरा मानना है कि यह स्पष्ट करता है कि यीशु जानबूझकर एक राजा के रूप में यरूशलेम में प्रवेश करना चुन रहे हैं। यहाँ तक कि पिलातुस द्वारा यीशु के विरुद्ध स्वयं लगाया गया आरोप कि वह यहूदियों का राजा है और इसलिए राजद्रोह का दोषी है, यह सुझाव देता है कि यीशु के अपने तौर-तरीकों में कुछ ऐसा था जो यहूदियों का राजा होने के दावे की वैधता को जन्म देता था।

लेकिन अगर हम उन उपाधियों को देखें जिन्हें यीशु ने मार्क के सुसमाचार में सबसे ज़्यादा खुले तौर पर व्यक्त किया है, तो हम तुरंत ही मनुष्य के पुत्र पर पहुँच जाते हैं। मनुष्य का पुत्र सिर्फ यीशु से ही प्रकट होता है। मार्क ने अपनी संपादकीय टिप्पणियों में उसे मनुष्य का पुत्र नहीं कहा है।

सुसमाचार में अन्य लोग यीशु को इस उपाधि से संबोधित नहीं करते। उदाहरण के लिए, जब यीशु ने शिष्यों से पूछा कि दूसरे लोग उसे कौन कहते हैं, या यहाँ तक कि वे उसे कौन कहते हैं, तो कोई भी उत्तर नहीं देता, मनुष्य का पुत्र। महायाजकों ने यीशु पर मनुष्य का पुत्र होने का दावा करने का आरोप नहीं लगाया।

वे उससे पूछते हैं कि क्या वह मसीहा है, धन्य का पुत्र। हालाँकि यह काफी दिलचस्प है, यीशु का जवाब, जिसमें वह पुष्टि करता है कि वह मनुष्य का पुत्र है, ईशानिंदा के आरोपों की ओर ले जाता है, यह दर्शाता है कि किसी शीर्षक या कथन का कोई विचार था। जैसा कि हम मार्क पर अपने

नज़रिए के दौरान चर्चा करते हैं, मुझे यकीन है कि यीशु द्वारा इस्तेमाल किए गए मनुष्य के पुत्र की उपाधि की उत्पत्ति, इसकी पृष्ठभूमि, इसकी पृष्ठभूमि, यदि आप चाहें तो, दानिय्येल 7 से है, मनुष्य के पुत्र जैसे व्यक्ति की छवि से।

उदाहरण के लिए, दानिय्येल 7 में जो हम देखते हैं और यीशु के अपने शब्दों के बीच संबंध हैं। यीशु अपने बारे में कहते हैं कि वे मनुष्य के पुत्र हैं जो पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएंगे, मरकुस 8:38। मरकुस 13:26 में यीशु कहते हैं कि वे महान शक्ति और महिमा के साथ बादलों में आएंगे। मरकुस 14:62 में वे स्वर्ग के बादलों पर आ रहे हैं। इनमें से प्रत्येक बात मन को आकर्षित करती है और दानिय्येल 7 में मनुष्य के पुत्र के अंश की तरह एक को प्रतिध्वनित करती है। हालाँकि मनुष्य का पुत्र मसीहा शीर्षक जितना निश्चित नहीं हो सकता है, यह निश्चित रूप से एक उच्च क्राइस्टोलॉजिकल शीर्षक है। यीशु खुद का उपयोग करते हैं, जिसका अर्थ है कि वे खुद को उस महान युगांतिक, सर्वनाशकारी व्यक्ति के रूप में पहचानते हैं।

वास्तव में, यह शीर्षक की बहुत अस्पष्टता या इसकी अनिश्चित प्रकृति हो सकती है जिसे यीशु ने सबसे अधिक आकर्षक पाया। जबकि मसीहा की समझ अब उस तरीके से दूर हो गई थी जिस तरह से यीशु इसे समझना चाहते थे, और इस प्रकार यीशु मसीहा को अपना देने के साथ होने वाले राजनीतिक उत्साह के प्रति प्रतिरोधी थे, मनुष्य के पुत्र की उपाधि की बहुत अस्पष्टता ने उन्हें बिना किसी चिंता या इस तरह की हिचकिचाहट के इसे एक तरह से परिभाषित करने की अनुमति दी। बेशक, यीशु मनुष्य के पुत्र की उपाधि का उपयोग इस द्वंद्व को पकड़ने के लिए करते हैं कि वह अधिक शक्तिशाली है जो पीड़ित होगा।

मनुष्य के पुत्र के रूप में, यीशु खुद को महान अधिकार वाले व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वह खुद को मनुष्य के पुत्र के रूप में बोलते हैं, जिसके पास मरकुस 2 में पापों को क्षमा करने का अधिकार है। मरकुस 2 में सब्त के दिन पर अधिकार होना। न्याय करने का अधिकार होना, मरकुस 8, मरकुस 13, मरकुस 14। इसलिए, कई मायनों में, यीशु द्वारा मनुष्य के पुत्र का उपयोग दानिय्येल 7 के मूल भाव से मेल खाता है, जो कि परमप्रधान के साथ है।

लेकिन फिर भी, यह यीशु द्वारा पीड़ा में मनुष्य के पुत्र की उपाधि के उपयोग के साथ जुड़ा हुआ है। वह मनुष्य का पुत्र है जिसे अस्वीकार कर दिया जाएगा, पीड़ा होगी, और मार्क 8, मार्क 9 और मार्क 10 में मर जाएगा। गारलैंड, अपनी पुस्तक में, मार्क में एक अधिनियमित क्राइस्टोलॉजी का भी वर्णन करता है।

मुझे यह शब्द बहुत पसंद है। यह मार्क के अध्ययन के दौरान हम जो कर रहे हैं, उसके साथ मेल खाता है, और इस तरह, विशिष्ट शीर्षकों के अलावा, मार्क यीशु की पहचान को क्रिया और शब्दों में प्रस्तुत करता है, जिनमें से कई क्रियाएँ और शब्द शास्त्रों के अर्थ को दर्शाते हैं। हमने इस बारे में बहुत कुछ बताया है, और यहाँ इस अधिनियमित क्राइस्टोलॉजी का एक अच्छा सारांश है, इन कार्यों का जो यीशु ने किया और जो यह भी बताते हैं कि वह कौन है।

सबसे पहले, हम यीशु की आवाज़ में उसकी शक्ति देखते हैं। उसके पास बुलाने की शक्ति है। उसका पहला काम शिष्यों को अपने पीछे चलने के लिए बुलाना है।

और इस आह्वान में, तत्काल प्रतिक्रिया हुई। हमने इसे एंड्रयू और पीटर और जेम्स और जॉन के साथ देखा। हमने इसे हलफर्ड के बेटे लेवी के साथ देखा।

मार्क में यह दिलचस्प है, मार्क हमें इस बारे में बहुत अधिक पृष्ठभूमि नहीं देता है कि यीशु द्वारा वास्तव में अपने शिष्यों को बुलाने से पहले क्या हुआ था। अन्य सुसमाचारों के विपरीत, हमारे पास इस बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं है कि उनमें से कुछ लोग जॉन बैपटिस्ट का अनुसरण कैसे कर रहे थे, और फिर जॉन बैपटिस्ट ने उन्हें यीशु का अनुसरण करने का निर्देश दिया, इसलिए हमारे पास निरंतर होने वाली बातचीत नहीं है। मार्क में, हमारे पास बस इतना है कि यीशु कह रहे हैं, मेरे पीछे आओ, और तत्कालता।

मेरा मानना है कि मार्क ने इस बात पर जोर इसलिए दिया है ताकि हम समझ सकें कि यीशु उसी तरह बुलाते हैं जैसे परमेश्वर बुलाते हैं, कि उनकी आवाज़ में अधिकार है। यीशु द्वारा शिष्यों को बुलाए जाने और उत्पत्ति 12 में परमेश्वर द्वारा अब्राहम को बुलाए जाने के बीच एक समान संबंध देखना मुश्किल नहीं है, जहाँ वह कहता है, मेरे पीछे आओ, और आज्ञाकारिता तुरंत होती है। ध्यान दें कि शिष्यों की प्रतिक्रिया पर जोर नहीं दिया गया है, बल्कि यीशु के बुलाने के अधिकार पर जोर दिया गया है।

हम शैतानी दुनिया पर भी इस आवाज़ की शक्ति देखते हैं। हमने अपने पूरे अध्ययन में इसका पता लगाया है। यीशु का वचन उसे आत्माओं पर सर्वोच्च अधिकार के रूप में प्रस्तुत करता है।

अपनी आवाज़ में, वह उन्हें चुप रहने का आदेश देता है, और वे तुरंत चुप हो जाते हैं। अपनी आवाज़ में, वह उन्हें अपने मेज़बान को छोड़ने का आदेश देता है, और वे तुरंत अपने मेज़बान को छोड़ देते हैं। तुरंत समर्पण हो जाता है।

ध्यान दें, हमेशा ईश्वरीय शक्ति पर जोर दिया गया है। कोई विशेष वाक्यांश नहीं है, कोई विशेष तकनीक नहीं है। यीशु और राक्षसों के बीच कोई चल रही लड़ाई नहीं है।

अधिकार केवल यीशु के पास है, और यह उसकी आवाज़ में है। वास्तव में, अधिकार इस तरह का है कि मार्क के सुसमाचार में एक स्थिर बात यह थी कि राक्षसों से बात करने और उन्हें आज्ञा मानने के लिए कहने की उसकी क्षमता पर आश्चर्य हुआ। हम कफरनहूम में पहले दिन से ही देखते हैं कि कैसे भीड़ राक्षसों पर उसके अधिकार पर आश्चर्यचकित थी।

हमने मरकुस 3 में यह भी देखा कि कैसे धार्मिक नेताओं ने दुष्टात्माओं पर बोलने के यीशु के अधिकार को समझने की कोशिश में, यीशु पर प्रेतग्रस्त होने और बेलज़ेबुल के साथ गठबंधन करने का आरोप लगाया, जिसके जवाब में यीशु ने एक दृष्टांत कहा, एक शक्तिशाली व्यक्ति का दृष्टांत जो आता है और शैतान के घर पर छापा मारता है। यीशु वह है जो अपने पाप में अधिक शक्तिशाली है। वह किले पर छापा मारने और बंदियों को मुक्त करने में सक्षम है।

बेशक, शैतानी दुनिया पर अधिकार और यीशु की आवाज़ लीजन के विनाश में सबसे ज़्यादा स्पष्ट है। राक्षसों पर यीशु के अधिकार की सीमा की पूरी अभिव्यक्ति, जहाँ हमारे पास यह दयनीय

आदमी है जो सैकड़ों राक्षसों से ग्रस्त था, वह सीमा जिसके लिए लीजन एक उपयुक्त वर्णन है, और इसके लिए भी तत्काल न्याय और तत्काल आदेश था। इसके अलावा, हम यह भी देखते हैं कि चंगा करने की शक्ति का यह अधिनियमित क्राइस्टोलॉजी भी है।

हमने बुखार को ठीक करने की उनकी शक्ति में इसे देखा, जिससे तत्काल स्वास्थ्य लाभ हुआ। हमने कुष्ठ रोग को ठीक करने की उनकी शक्ति में इसे देखा, एक ऐसी बीमारी जिसका इलाज केवल ईश्वर के अलावा कोई नहीं कर सकता, एक ऐसी बीमारी जो जीवित मृत्यु का प्रतीक थी। हमने इसे लकवाग्रस्त व्यक्ति को सुनने की उनकी क्षमता में देखा, न केवल लकवाग्रस्त व्यक्ति को सुनने की, बल्कि उस उपचार को पापों को क्षमा करने और उससे भी अधिक उपचार करने की उनकी क्षमता के प्रतीक के रूप में उपयोग करने की उनकी क्षमता में।

हमने याईर की बेटी के साथ देखा कि यीशु के पास मृतकों को जीवित करने की शक्ति थी। यह काफी दिलचस्प है कि यीशु के चमत्कारों में, हम अंधे को चंगा करते, बहरे को चंगा करते, लंगड़े को चंगा करते और गूंगे को चंगा करते देखते हैं। इसे मार्क के यशायाह 35:4-6 के कहने के तरीके के रूप में देखना बहुत दूर की बात नहीं है, जब परमेश्वर, जो अंधे की आंखें खोलता है, बहरे के कान खोलता है, लंगड़े को हिरण की तरह छलांग लगाता है, और गूंगे को खुशी से चिल्लाने देता है।

दूसरे शब्दों में, उपचार की शक्ति केवल मार्क के सुसमाचार में एक उपचारक की शक्ति नहीं है, बल्कि यह यीशु के अपने दिव्य अधिकार की प्रस्तुति है, यीशु की न केवल पतन के परिणामों को संबोधित करने की क्षमता बल्कि इसके कारण को भी समाप्त करने की क्षमता है। दिव्य चमत्कार इस अधिनियमित क्राइस्टोलॉजी का एक और पहलू है। इससे मेरा तात्पर्य उन चमत्कारों से है जो काम पर दिव्यता को दर्शाते हैं।

हज़ारों लोगों को भोजन कराने की बात याद आती है। दो तरह के भोजन कराए गए, एक यहूदियों को दिया गया, क्योंकि उनके पास चरवाहा नहीं था, और दूसरा अन्यजातियों को दिया गया, क्योंकि वे भूख से बहुत परेशान थे। इन दोनों में, एक अंतिम भोज को ध्यान में रखा गया है, वह महान भोज जिसे परमेश्वर सभी चीज़ों के अंत में आयोजित करता है।

यहेजकेल 34, परमेश्वर एक अच्छे चरवाहे के रूप में अच्छी चरागाह देता है, जैसा कि हमने बात की, यहाँ भी प्रतिध्वनित होता है, और भजन 23 भी ऐसा ही है। दूसरे शब्दों में, भोज केवल यीशु की देखभाल को नहीं दिखाते हैं, बल्कि वास्तव में एक दिव्य भोज को प्रदर्शित करते हैं। मरकुस 4, तूफान पर शक्ति रचनात्मक शक्ति है।

उत्पत्ति, भजन और भविष्यद्वक्ता, खास तौर पर यशायाह, सृष्टि पर परमेश्वर की शक्ति के बारे में बात करते हैं। उदाहरण के लिए, यशायाह 43 में, परमेश्वर के लोगों को डर नहीं लगना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें नाम से बुलाया है। जब वे पानी से गुज़रेंगे, तो परमेश्वर उनके साथ होगा।

जब वे नदियों से गुज़रते हैं, तो नदियाँ उन्हें बहाकर नहीं ले जातीं। तूफ़ान का उपचार, कई मायनों में, इस बात का प्रदर्शन है कि यीशु के पास न केवल एक अनोखी शक्ति है, बल्कि वास्तव में उसके पास वह शक्ति है जो परमेश्वर की है। हमने पानी पर चलने के बारे में बात की।

अय्यूब 9, अय्यूब 38, भजन 77, यशायाह 43 कहते हैं कि केवल परमेश्वर ही लहरों पर चल सकता है। यीशु का पानी पर चलना सिर्फ़ देखने लायक आश्चर्य नहीं है, बल्कि यह इस बात का सबूत है कि परमेश्वर उनके बीच में है। मरकुस के सुसमाचार में यीशु का शिक्षण का अधिकार स्पष्ट था।

वह किसी और की तरह अधिकार के साथ सिखाता है। भीड़ पर टिप्पणी करें। वह शास्त्रियों के विपरीत अधिकार के साथ सिखाता है।

यीशु की शिक्षाओं में सब्त और उसके उद्देश्य के बारे में नियम, शुद्धता के नियमों और उनके उद्देश्य के बारे में नियम, आहार के नियमों और उनके उद्देश्य के बारे में नियम, तलाक और उसके उद्देश्य के बारे में नियम, और सबसे बड़ी आज्ञा की घोषणा शामिल थी। हमने जिन बातों पर गौर किया, उनमें से एक यह है कि यीशु का अधिकार शास्त्रियों से अलग था और यह केवल व्याख्या नहीं करता था, बल्कि वास्तव में, यीशु ने ईश्वरीय इरादे की मुद्रा अपनाई, कानून का अर्थ और कारण बताएगा, न कि केवल यह कि इसे कैसे समझा जाना चाहिए। ये सभी, दूसरे शब्दों में, एक सक्रिय, मज़बूत क्राइस्टोलॉजी की ओर इशारा करते हैं कि यीशु वह है जिसके पास परमेश्वर का अधिकार है और वह परमेश्वर की तरह कार्य करता है, जो मार्क के प्रायश्चित संदेश के विपरीत है।

मार्क का क्राइस्टोलॉजी ताकत का एक उदाहरण है, फिर भी यह यीशु की पीड़ा की आवश्यकता के भीतर भी निहित है, जिसे पीड़ित होना और मरना होगा। मैं प्रायश्चित धर्मशास्त्र के बारे में चर्चा के साथ मार्क के सुसमाचार के इस अवलोकन को समाप्त करना चाहूंगा। मुझे लगता है कि क्राइस्टोलॉजी और प्रायश्चित धर्मशास्त्र ही हैं जो यीशु के बारे में संदेश को जोड़ते हैं।

प्रायश्चित का गहरा सम्बन्ध मार्क की इस समझ से है कि मसीह कौन है। हमारे पास वह है जिसे गारलैंड ने दिव्य अवश्य के रूप में सटीक रूप से वर्णित किया है। मार्क 8.31 में यीशु की पहली भविष्यवाणी, यीशु के अधिकार, यीशु की शक्ति, यीशु के मसीह-विज्ञान और यीशु के अधिनियमित मसीह-विज्ञान की स्थापना के आठ अध्यायों के बाद, यीशु फिर सवाल पूछते हैं कि लोग उनके बारे में क्या कहते हैं और शिष्य उनके बारे में क्या कहते हैं।

इस प्रतीत होने वाले चरमोत्कर्ष पर, पतरस ने स्वीकार किया कि यीशु ही मसीहा है, जिस पर यीशु ने उत्तर देते हुए कहा कि मनुष्य के पुत्र को बहुत सी पीड़ाएँ सहनी होंगी, उसे पुरनियों, मुख्य पुजारियों और व्यवस्था के शिक्षकों द्वारा अस्वीकार किया जाना चाहिए, और उसे अवश्य ही मार दिया जाना चाहिए। यहाँ 'मस्ट' का प्रयोग ईश्वरीय इच्छा, ईश्वरीय योजना को दर्शाता है। तीनों भविष्यवाणियों, मार्क 8, मार्क 9 और मार्क 10 में से प्रत्येक में, यीशु के आने वाले दुख और मृत्यु के पीछे ईश्वरीय कृपा का संकेत मिलता है।

यीशु की मृत्यु केवल दुष्ट लोगों द्वारा किसी खतरे के विरुद्ध षडयंत्र रचने का परिणाम नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर की पूर्वनिर्धारित योजना है जिसे क्रियान्वित किया जा रहा है। वास्तव में, यीशु ने जॉन बैपटिस्ट के बारे में भी ऐसा ही कहा जब रूपांतरण के बाद शिष्यों ने एलियाह के बारे में पूछा, और यदि एलियाह को पहले आना चाहिए, तो यीशु ने कहा कि यह सच है, एलियाह को जॉन बैपटिस्ट के रूप में संदर्भित करते हुए, कि जॉन बैपटिस्ट पहले आया है, एलियाह पहले आया है, और फिर उल्लेख किया कि कैसे वह अग्रदूत है और उसका दुख यह दर्शाता है कि मनुष्य के पुत्र के साथ क्या होना चाहिए। यदि हम अंतिम भोज को देखें, तो यीशु कहते हैं कि मनुष्य का पुत्र वैसे ही जाएगा जैसा उसके बारे में लिखा गया है, जो एक आकर्षक कथन है क्योंकि यहाँ किसी विशिष्ट शास्त्र का संदर्भ नहीं दिया गया है।

वास्तव में, ऐसा कोई विशेष शास्त्र नहीं है जो मनुष्य के पुत्र के ऐसे कष्ट से गुजरने की बात करता हो। लेकिन हमारे पास कष्ट सहने वाले सेवक के बारे में बोलने वाले शास्त्र हैं, खासकर यशायाह में, खासकर यशायाह 53 में, और यहाँ यशायाह 53 के शब्दों को सुनना उपयोगी हो सकता है। हमारे संदेश पर किसने विश्वास किया है, और किस पर प्रभु का भुज प्रकट हुआ है? वह उसके सामने कोमल अंकुर की तरह और सूखी भूमि में से निकली जड़ की तरह उग आया, उसमें न तो कोई सुंदरता थी और न ही कोई ऐश्वर्य कि हम उसकी ओर आकर्षित हो सकें, न ही उसके रूप में कुछ ऐसा था कि हम उसकी इच्छा करें।

वह मानवजाति द्वारा तिरस्कृत और अस्वीकार किया गया था, वह पीड़ित व्यक्ति था और दर्द से परिचित था, ऐसा व्यक्ति जिससे लोग अपना चेहरा छिपाते हैं। वह तिरस्कृत था, और हमने उसे कम आंका। निश्चित रूप से, उसने हमारा दर्द उठाया और हमारी पीड़ा को सहन किया, फिर भी हमने उसे ईश्वर द्वारा दंडित, उसके द्वारा मारा और पीड़ित माना, लेकिन वह हमारे अपराधों के लिए छेदा गया था; वह हमारे अधर्म के लिए शापित था। हमें शांति लाने वाली सजा उस पर थी, और उसके घावों से हम ठीक हो गए हैं।

हम सब के सब भेड़ों की तरह भटक गए हैं, हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया है, और यहोवा ने हम सब के अधर्म का बोझ उसी पर डाल दिया है। वह सताया गया और पीड़ित हुआ, फिर भी उसने अपना मुँह नहीं खोला, वह वध किए जाने वाले मेमने के समान था, और जैसे भेड़ अपने ऊन कतरने वालों के सामने चुप रहती है, वैसे ही उसने अपना मुँह नहीं खोला। उत्पीड़न और न्याय के द्वारा उसे उठा लिया गया, फिर भी उसकी पीढ़ी में से किसने विरोध किया? क्योंकि वह जीवितों की भूमि से काट दिया गया था, मेरे लोगों के अपराध के लिए उसे दंडित किया गया था।

उसकी मृत्यु के समय उसे दुष्टों और धनवानों के साथ कब्र में रखा गया, यद्यपि उसने कोई हिंसा नहीं की थी, न ही उसके मुँह से कोई छल निकला था। फिर भी उसे कुचलना और उसे कष्ट देना प्रभु की इच्छा थी, और प्रभु ने उसके जीवन को पाप के लिए बलिदान कर दिया। वह अपनी संतान को देखेगा और अपने दिनों को लम्बा करेगा, और प्रभु की इच्छा उसके हाथ में सफल होगी। कष्ट सहने के बाद, वह जीवन का प्रकाश देखेगा और संतुष्ट होगा।

अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी सेवक बहुतों को धर्मी ठहराएगा, और उनके अधर्म का बोझ आप उठाएगा। इस कारण मैं उसको महान लोगों के बीच भाग दूंगा, और वह बलवानों के संग लूट बांटेगा, क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उंडेल दिया, और वह अपराधियों के संग गिना गया। क्योंकि उसने बहुतों के पाप का बोझ उठाया, और अपराधियों के लिये बिनती की।

मुझे लगता है कि यह वही शास्त्र है जिसका जिक्र यीशु कर रहे हैं, जिसमें लिखा है कि उन्हें जाना ही होगा। चूँकि यीशु की मृत्यु शास्त्र की बात को पूरा करती है, इसलिए यह ईश्वरीय विधान के तहत होना चाहिए। इसलिए क्रूस पर चढ़ना केवल एक अपमान नहीं है, बल्कि यह ईश्वर के न्याय और उनकी दया का महान और एक साथ प्रदर्शन है।

यह परमेश्वर पिता की इच्छा और परमेश्वर पुत्र की आज्ञाकारिता का प्रदर्शन है। यह हार की तस्वीर से बहुत दूर है। यह जीत का प्रदर्शन है।

यह वास्तव में यीशु के राज्याभिषेक का क्षण है, और यह अपने साथ मोक्ष लाता है। हालाँकि यीशु कहते हैं कि उन्हें मरना ही होगा, उनकी मृत्यु के उद्धारकारी लाभ के बारे में केवल दो स्पष्ट कथन हैं, लेकिन ये दोनों मार्क के प्रायश्चित धर्मशास्त्र को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। पहला है मार्क 10.45। यह तीसरी जुनून भविष्यवाणी है।

यीशु ने निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य का पुत्र सेवा करने आया था, ताकि वह बहुतों के लिए छुड़ौती के रूप में अपना जीवन दे सके। यह हिंसा, यह पीड़ा, यह मृत्यु की तस्वीर है जो दूसरों के लिए बदले में यीशु पर की जाएगी। कुछ ऐसा जो दूसरों की स्वतंत्रता खरीदता है।

बेशक, यह तुरंत यशायाह 53 और जो हमने अभी पढ़ा है, उन लोगों के बारे में याद दिलाता है जो छुड़ाए गए हैं, जिन्हें बचाया गया है, जिन्हें माफ़ किया गया है। फिर से, मार्क 14:24 में, अंतिम भोज में, यीशु अपने आने वाले दुख और मृत्यु को निर्गमन कथा के महान उद्धारक कार्य से जोड़ता है। यह उनके कथन में है, यह वाचा का मेरा खून है, जो बहुतों के लिए बहाया जाता है, कि यीशु का प्रायश्चित, या मार्क का प्रायश्चित धर्मशास्त्र, सामने आता है।

मेरा मानना है कि यह यिर्मयाह 31 :31-34 को याद दिलाता है, जहाँ परमेश्वर कहता है कि वह उन्हें एक नई वाचा देगा, और वह उनकी दुष्टता को क्षमा करेगा और उनके पापों को फिर कभी याद नहीं रखेगा। जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से मुक्त किया, तो पहली वाचा को बलि के जानवर के खून से सील कर दिया गया था। यहाँ, यीशु का खून नई वाचा को सील कर देता है, जिससे पुरानी वाचा और उसकी बलि प्रणाली की ज़रूरत अब खत्म हो जाती है।

जैसा कि हमने चर्चा की, क्रूस पर यीशु को परमेश्वर का पूरा क्रोध मिला। गेथसेमेन के बगीचे की प्याली की कल्पना को याद करें, और वह प्रार्थना करता है कि यह प्याला उसके लिए गुजर जाए। वह यह भी कहता है कि यह प्याला परमेश्वर के क्रोध के उंडेले जाने का प्रतीक है। तो क्रूस पर यीशु को परमेश्वर का पूरा क्रोध मिला, और ऐसा करके, यीशु की पीड़ा और मृत्यु के माध्यम से पापियों की दुष्टता को दूर करने की दिव्य इच्छा को प्राप्त किया।

परमेश्वर का निर्णय, उसका पवित्र न्याय, इसलिए उंडेला गया ताकि जो लोग मानते हैं कि यीशु मनुष्य का पुत्र है, जिसने एक पीड़ित सेवक के रूप में कष्ट सहा, कि यीशु मसीहा है, परमेश्वर का पुत्र, शक्तिशाली, अब उसके लहू द्वारा मुहरबंद नई वाचा का आनंद ले सकता है। विडंबना यह है कि जब यीशु क्रूस पर पीड़ित था, तो उसके आस-पास के लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया, यह कहते हुए कि उसने दूसरों को बचाया, लेकिन वह खुद को नहीं बचा सका, यह महसूस करने में विफल रहा कि क्रूस को सहने का विकल्प चुनकर, यीशु वास्तव में अभी भी दूसरों को बचा रहा था, जैसा कि केवल शक्तिशाली ही कर सकता है। मार्क के धर्मशास्त्र पर हम यहाँ और भी बहुत कुछ कवर कर सकते हैं, लेकिन मुझे उम्मीद है कि इस अंतिम चर्चा में, साथ ही साथ सुसमाचार के माध्यम से इस पूरे भ्रमण में, यह आपके लिए एक आशीर्वाद रहा होगा।

मार्क के सुसमाचार में, हमें इस बात की शक्तिशाली व्याख्या मिलती है कि यीशु कौन है और उसके आने का क्या मतलब है। वह सबसे शक्तिशाली व्यक्ति है जिसने कष्ट सहे। मैं आपके समय और आपके अध्ययन के लिए आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ, और मैं मार्क के सुसमाचार के माध्यम से यीशु के जीवन और मृत्यु पर विचार करने के लिए आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ।

प्रभु हमारी आस्था को और गहरा करें। हम भी उस सूबेदार की तरह यह कह सकें कि यह व्यक्ति निश्चित रूप से परमेश्वर का पुत्र था। परमेश्वर आपको आशीर्वाद दे।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क की पुस्तक पर दिया गया शिक्षण है। यह सत्र 25 है, मार्क का धर्मशास्त्र।